- : श्रीराधे : -

श्रीधाम वृन्दावनम्

श्रीरामजन्मभूमिशिलापूजनाचार्य

पण्डित गङ्गाधर पाठक 'मैथिल'

श्रीवृन्दावनधाम अखण्ड भूमण्डल का समुज्ज्वल शृङ्गारस्वरूप है । श्रीवृन्दावनधाम की सेवा के लिए स्वयं ''श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि'' ऐश्वर्याद्यधिष्ठात्री अनन्तब्रह्माण्डेश्वरी भगवती इन्दिरा लालायित रहती हैं । व्रजघोषनिवासियों के परमसौभाग्य की सराहना करते हुए ब्रह्मा भी विस्मित होकर ऐश्वर्यमाधुर्यादिसारसर्वस्व भगवान् श्रीकृष्ण से कहते हैं-

एषां घोषनिवासिनामुत भवान्किं देवरातेति नश-्
चेतो विश्वफलात्फलं त्वदपरं कुत्राप्ययन्मुह्यति ।
सद्वेषादिव पूतनाऽपि सकुला त्वामेव देवापिता
यद्धामार्थसुहृत्प्रियात्मतनयप्राणाशयास्त्वत्कृते ॥

हे देव दयानिधे ! आप इन व्रजघोषनिवासियों को क्या देंगे ? आप विश्वफलात्मा हैं; आप से बढ़कर और कोई दूसरी वस्तु क्या हो सकती है, जिसे देकर आप इनसे उऋण हो जायँ ? प्राणी विविध प्रकार के ऐहिकामुष्मिक सुख को ही परमपुरुषार्थ समझता है, किन्तु जिनके आँगन में उस परमसुख का परमोद्गमस्थल साक्षात् परब्रह्म परमात्मा ही मूर्त्तिमान् होकर धूलिधूसरित हुआ क्रीड़ा कर रहा है, उनके लिए वे क्षुद्रातिक्षुद्र सौख्यकण फलरूप कैसे हो सकते हैं ? जिन्हें जो वस्तु अप्राप्त होती है, वही उन्हें फलरूप से स्वीकृत हुआ करती है । अत: जिन्हें आप आत्मीयरूप से अहर्निश प्राप्त हैं, उन्हें सर्वज्ञ या सर्वशक्तिमान् होकर भी आप क्या दे सकते

हैं ? इसलिए आपको तो इनका ऋणी बन कर ही रहना पड़ेगा । इस विषय में मुझ ब्रह्मा का भी चित्त विमोहित हो रहा है ।

हे विभो ! यदि आप ऐसा कहें कि मैं स्वयं को ही समर्पित कर दूँगा तो इसमें भी कोई महत्त्व की बात न होगी, क्योंकि जो पूतना दम्भ से माता के समान आचरण दिखलाती हुई आपका अनिष्ट करने के लिए स्तनों में विष लगाकर आयी थी, उसे भी उसके कुलसहित आपने अपने स्वरूप को ही प्राप्त करा दिया था; फिर जिनके धन, धाम, स्वजन, प्रिय, आत्मा, प्राण और चित्त आप पर ही निछावर हैं उन व्रजवासियों को आप क्या देंगे ? उनके तो आप सदैव ऋणी ही रहेंगे । अहो ! जिन व्रजबालकों का उच्चस्वर से किया हुआ हरिगुणगान तीनों लोकों को पवित्र कर देता है, हम उनके चरणकमलों की बारम्बार वन्दना करते हैं ।

ब्रह्मा भी जिस व्रजरज को चूमने के लिए सीना तान कर इस दिव्य भूमि में प्रवेश का साहस नहीं करते, दण्डप्रणाम करते आते हैं; उस दिव्यातिदिव्य लोकोत्तरोत्तम भगवद्रसरसिकों की रससिद्ध राजधानी श्रीवृन्दावनधाम की अनुपमेयता का वर्णन कौन करे ! श्रीवृन्दावनधाम में महान् अद्वैताचार्य लीलाशुक श्रीबिल्वमङ्गलजी की वेदवेदान्त में ढूँढ़ने वाली ब्रह्मगति अवरुद्ध हो गई । वे नन्द की देहली पर लटकते हुए ब्रह्म का दर्शन करते ही श्रुति-स्मृति को किनारे रख कहने लगे-

श्रुतिमपरे स्मृतिमपरे भारतमपरे भजन्तु भवभीताः ।
अहमिह नन्दं वन्दे यस्यालिन्दे परं ब्रह्म ॥

संसारसागर से भयभीत होकर कोई श्रुति को भजे, कोई स्मृति को भजे और कोई महाभारत आदि का भजन करते रहें; बलिहारी हो परन्तु मैं तो उस नन्द को भजता हूँ, जिसकी देहली पर वेदवेदान्तवेद्य परब्रह्म लटक रहा है । महान् वेदधर्मशास्त्रज्ञ जिस बिल्वमङ्गल ने वेदों के परमतात्पर्य परब्रह्म को व्रज

के कीचड़ में सने देखा, वह वेदान्ती उससे मन को हटाकर कितनी देर माला फेर सकता है ? नहीं फेर सकता । उन्हें तो कहना पड़ा-

निगमतरोः प्रतिशाखं मृगितं मिलितं न तत्परब्रह्म ।
मिलितमिदानीमङ्के गोपवधूटीपटाञ्चले नद्धम् ॥
शृणु सखि कौतुकमेकं नन्दनिकेताङ्गणे मया दृष्टम् ।
धूलीधूसरिताङ्गो नृत्यति वेदान्तसिद्धान्तः ॥

वेदों की प्रत्येक शाखाओं में परब्रह्म को ढूँढ़ा, नहीं मिला; मिला तो कहाँ ? नन्दगोपवधूटी के पटाञ्चल से बँधा-जकड़ा उसकी गोद में । पुनः वे एक दृश्यदर्शन से पागल हो कहते हैं- हे सखि ! एक अत्यन्त विचित्र आश्चर्य कौतुक सुनो- वेदान्तसिद्धान्त वेदान्तवेद्य परात्पर परब्रह्म परमात्मा तो नन्दरानी माता यशोदा के प्राङ्गण में धूलिधूसरित हो थेई थेई कर नृत्य कर रहा है । भगवत्प्रेमियो ! जो ज्येष्ठ के प्रचण्ड ताप में नवनीत चुराकर नङ्गे पाँव भागते अपने परमप्यारे हृदय के दुलारे नन्हें ब्रह्म को देख रहा है, वह आखिर नाक दबाए कितनी देर क्रूरता कर सकता है ? क्षण भर भी नहीं । वह तो बिना पल बिताये जूती लेकर कृष्ण के पीछे भाग रहा है, और अत्यन्त व्याकुल होकर शोर मचा रहा है-

नीतं यदि नवनीतं नीतं नीतं च किं तेन ।
आतपतापितभूमौ माधव मा धाव मा धाव ॥

हे माधव ! तूने मक्खन चुराया तो चुराया, कोई बात नहीं; तुम्हारा ही था । परन्तु प्रचण्ड ताप से सन्तप्त भूमि पर नङ्गे पाँव तो मत भागो, मत भागो लाला; ये जूती पहन लो । अरे ओ मेरे माधव ! थोड़ा रुक तो जा, मैं बूढ़ा तुम्हारे पीछे भाग रहा हूँ; अब विशेष मत भगा । बिल्कुल थका जा रहा हूँ, मान जा; जूती तो पहन ले ।

कृष्णप्रेम में पागल बने ऐसे महामानव को धर्मशास्त्र का पाठ कितना पढ़ाया जा सकता है ? रत्ती भर भी नहीं । कृष्णलीलासमाकृष्टचित्त रसखान ने ऐसे ही दृश्यों का चित्राङ्कन किया है-

सेस गनेस महेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं
जाहि अनादि अनंत अखंड अछेद अभेद सुबेद बतावैं ।
नारद से सुक ब्यास रटैं पचिहारे तऊ पुनि पार न पावैं
ताहि अहीर की छोहरियाँ छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं ।।

जिसके इशारे पर संसार नाचता है, देवता जिसका स्तुतिगान करते थकते नहीं, नारद से व्यास-शुक पर्यन्त जिसके अलौकिक रूप-गुण का बखान नहीं कर सकते, स्वयं भगवान् वेद भी जिसके लोकोत्तर गुणगणार्णवों का वर्णन करते थक जाते हैं और ''नेति नेति'' की घोषणा कर डालते हैं; आज उस बालक परब्रह्म श्रीकृष्ण को व्रज के अहीरों की छोहरियाँ थोड़े से छाछ के लिए इधर-उधर नचा रही हैं । सज्जनो ! जो महाभाग अपने परमोपास्य परब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्ण को इस दशा में देख रहा हो, उसे धर्मशास्त्र का कोरा पाठ कितना पढ़ाया जा सकता है ? रत्ती भर भी नहीं ।

कृष्णग्रहगृहीतात्मा बिल्वमङ्गल जैसे कर्मनिष्ठ महात्मा को बाध्य होकर कहना पड़ जाता है- ''सन्ध्यावन्दन भद्रमस्तु भवतो भो स्नान तुभ्यं नमः'' हे सन्ध्यावन्दन ! तुम्हारा कल्याण हो । हे स्नान ! तुम्हें भी बार बार प्रणाम हो आदि । श्रीधामवृन्दावन के दिव्यरज का स्पर्श करते ही एक महान् वेदवेदान्ती को कहना पड़ा-

यत्र प्रविष्टः सकलोऽपि जन्तुरानन्दसच्चिद्घनतामुपैति ।

जहाँ प्रवेश करते ही प्राणिमात्र आनन्दसच्चिद्घनता को प्राप्त कर लेता है, आप उस सर्वोपास्य श्रीवृन्दावनधाम की समर्हणा नहीं कर सकते तो विगर्हणा भी मत करो ।

आप अहन्तावश विशेष नहीं समझना चाहते तो भी वेदादिशास्त्रों के परमतात्पर्य भगवान् श्रीराम-कृष्ण का भजन करो, वे परम दयालु आपकी दृष्टि बदल देंगे और आपका शरीर धारण करना सार्थक हो जाएगा । जन्मजन्मान्तरीय सुकृत के परिणामस्वरूप ही नहीं, अनन्तानन्तब्रह्माण्डनायिका भगवती श्रीराधिका के परम अनुग्रह से व्रजवृन्दावन के श्यामसिन्धु में समवगाहन का कदाचित् दिव्यावसर प्राप्त हो सकता है-

अनाराध्य राधापदाम्भोजयुग्मम् अनाश्रित्य वृन्दाटवीं तत्पदाङ्काम् ।

असम्भाष्य तद्भावगम्भीरचित्तान् कुतः श्यामसिन्धौ रसस्यावगाहः ।।

महारासेश्वरी व्रजेश्वरी भगवती श्रीराधामहारानी के चरणयुगल की समाराधना, उनके चरणारविन्दों से समङ्कित श्रीधामवृन्दाटवी का सुसेवन, उनकी बारम्बार चर्चा एवं गम्भीर चिन्तन किए बिना श्यामरससिन्धु में समवगाहन कैसे हो सकता है ? नहीं हो सकता । किसी प्रकार भगवच्चिन्तन करने वाले पर कटाक्ष करना बन्द करो और परमकृपालु दयालु भगवान् श्रीराधाकृष्ण के युगलचरणों का आश्रय लेकर स्वयं और संसार को धन्य करो । काल, अन्न और सङ्ग का प्रभाव सब पर पड़ता है, भगवान् सबके शास्ता हैं; आप ''अन्यस्य दोषगुणचिन्तनमाशु मुक्त्वा सेवाकथारसमहो नितरां पिब'' संसार के दोष ही नहीं, गुण का भी चिन्तन छोड़ो और भगवद्भागवत-सेवाकथारस का पान करो । प्रभु के पावन श्रीचरणों में अपनी सम्पूर्ण तर्कयुक्तियों का समर्पण कर दो और भगवच्छरण की प्रार्थना करो-

बुद्धिर्विकुण्ठिता नाथ समाप्ता मम युक्तयः ।

नान्यत्किञ्चिद्विजानामि त्वमेव शरणं मम ।।

हे नाथ ! इस भवप्रपञ्च से बचने के लिए मेरी विकुण्ठित बुद्धि काम नहीं कर रही, मेरी सारी तर्कयुक्तियाँ समाप्त हो चुकी हैं और अन्य कोई दूसरा साधन मैं जानता नहीं । हे विभो ! अब तो केवल तुम ही मेरी शरण

हो, आश्रय हो, रक्षक हो; मेरा कल्याण करो। श्रीवृन्दावनधाम गोलोकविहारी श्रीभगवान् की राजधानी या गृह ही नहीं; श्रीवेदव्यास के अनुसार भगवान् का दिव्यविग्रह है। यहाँ के प्रत्येक प्राणी परम सौभाग्यशाली हैं। भगवान् किससे क्या कराते हैं, वे ही जानते हैं; आप भगवान् और भगवान् के भक्तों का आश्रय ग्रहण करो। आपका कल्याण होगा।

श्रीवृन्दावनधाम के परम सौभाग्यशाली मनुष्यों का क्या कहना; यहाँ के कीट, पतङ्ग, वृक्ष, तृण, गुल्म, लता, वीरुधों के सौभाग्यातिशय को देखकर देवता आदि भी किसी रूप में यहाँ के रज में लोटना चाहते हैं। बड़े बड़े आत्माराम मुक्त महामुनीन्द्रगण भी श्रीवृन्दारज:सेवन के लिए विविध रूपों को धारण कर यहाँ विचरण करते हैं। श्रीवृन्दावनरस के समास्वादक सम्मान्य रसिक महाभागगण श्रीवृन्दावनमहिमामृतम् पिलाया करते थे-

भ्रातस्तिष्ठ तले तले विटपिनां ग्रामेषु भिक्षामट
स्वच्छन्दं पिब यामुनं जलमलं चीरैः सुकन्थां कुरु।
सम्मानं कलयातिघोरगरलं नीचापमानं सुधां
श्रीराधामुरलीधरौ भज रसाद्वृन्दावनं मा त्यज॥

हे भाई ! वृक्षों के नीचे-नीचे ठहर जा, गाँव-गाँव में भिक्षाटन कर, यमुना का स्वच्छन्द जल पान कर, चीथड़ों से उत्तम कन्था तैयार कर, सम्मान को घोर विष और तुच्छापमान को अमृत जान तथा प्रेम से श्रीराधा-मुरलीधर का भजन कर; परन्तु वृन्दावन का त्याग मत कर। श्रीवृन्दावनधाम में रह कर भक्ति चाहने वाले भक्ति पाते हैं, मुक्ति चाहने वाले मुक्ति पाते हैं और भुक्ति चाहने वाले अकल्पनीय भुक्ति पाते हैं।

आप बहुत कुछ चाहने के बाद भी बहुत पीछे हो तो बहुत आगे बढ़ रहे किन्हीं के पीछे पड़ो, परन्तु सावधान; उन्हें पीछे मत खींचो। सभी जीव भगवद्विधानानुसार ही अपने भाव और प्रारब्ध से भुक्ति, मुक्ति या भक्ति का भोग कर रहे हैं। आपमें भगवद्भक्ति प्रतिष्ठित हो।

समादरणीय स्वजनो ! मेरे अतिशय प्रयास के बाद भी आपको और अधिक प्रेमामृतार्णव में डूबने में जो कमी रह गई, उसमें मेरा दोष नहीं । तथापि आपने कुछ उलाहना देने का मन बना ही लिया है तो उन छलिये चित्तचोर को दे दें जिन्होंने ''चेतो मदीयमतसीकुसुमावभासं स्मेराननं स्मरति गोपवधूकिशोरम्'' बलपूर्वक मेरे दुर्बल चित्त को इस पन्ने से हटा कर उसका अपहरण कर लिया था । आपके अन्त:करण में भगवत्प्रेम का सागर लहराए और आपका रोम-रोम खिल उठे । प्रेमसागर की महातरङ्गें इतनी उत्ताल भरी हों जो आपके अन्दर में समा न सकें, बाहर बहने के लिए व्याकुल हों और बह ही जायँ-

श्याम हमारे स्नेह सखा कुछ ऐसी ही बात कहा करता है ।
जिन नैंनों से नीर बहा करता उन नैंनों में श्याम रहा करता है ।।
जिन नैंनों से नीर बहा करता उन नैंनों में श्याम रहा करता है ।।

सबके परमप्रेमास्पद भगवान् श्रीराधाकृष्ण आपके अप्त:करण में प्रेमसागर की उत्ताल महातरङ्गें उत्पन्न करें और आप भगवत्प्रेमपीयूषपान में पागल हो जायँ । भगवान् श्रीराधाकृष्ण ही आपकी गति-मति हों ।

।। भगवान् श्रीराधाकृष्ण सबका सुमङ्गल करेंगे । श्रीकृष्ण: शरणं मम ।।